

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

इंटरमीडिएट परीक्षा "अ"
(उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर

ज्ञानग्राहक के हस्ताक्षर

नोट—केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा—

अनुक्रमांक (अंकों में)—

अनुक्रमांक (शब्दों में

विषय—

प्रश्नपत्र संकेतांक—

परीक्षा का दिन—

परीक्षा तिथि—

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय—

केन्द्र संख्या—

परीक्षा कक्ष संख्या—

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम,

दिनांक—

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक—

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न—पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुख्यपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवाई ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा / रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर

सन्निरीक्षा प्रियोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक—

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक—

त्रुटि का प्रकार—

दिनांक—

हस्ताक्षर निरीक्षक—

नोट—परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तर पुस्तिका की संख्या—
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक—

ब ₁	ब ₂	ब ₃	ब ₄

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	ঝ	ঞ	ঞ	যোগ
01												
02												
03												
04												
05												
06												
07												
08												
09												
10												
11												
12												
13												
14												
15												
16												
17												
18												
19												
20												
21												
22												
23												
24												
25												
26												
27												
28												
29												
30												
31												
32												
33												
34												
35												

योग (शब्दों में

योग (अंकों में)

~० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- १ :-

(i)

सुड्स।

~० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- २ :-

(ii)

पक्षी में।

~० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ३ :-

(i)

गैहुं की।

~० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ४ :-

(ii)

मीथेन।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ५ :-

अनिवार्यक जनन :- वह प्रक्रिया जिसमें घटना के नये जीव का निर्माण हो जाता है, अनिवार्यक जनन कहलाती है।

उदाह - धास, मधुमक्खी (इंडॉन के निर्माण अर्थात् नर मक्खी) आदि।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ६ :-

ओपेरेन :-

जीन का वह खण्ड जो जीन की स्क्रिप्ट करता है, ओपेरेन कहलाता है। इसमें रेगुलेटर जीन, प्रोमोटर जीन, हानिक्रिएटर जीन तथा संरचनात्मक जीन होते हैं।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ७ :-

प्रतिजोड़िक के नाम :-

(i) पोनिसेलीन (सबसे पहला प्रतिजोड़िक)

(एलोकजैंडर, क्लोमिंग)
खोजकर्ता

(ii)

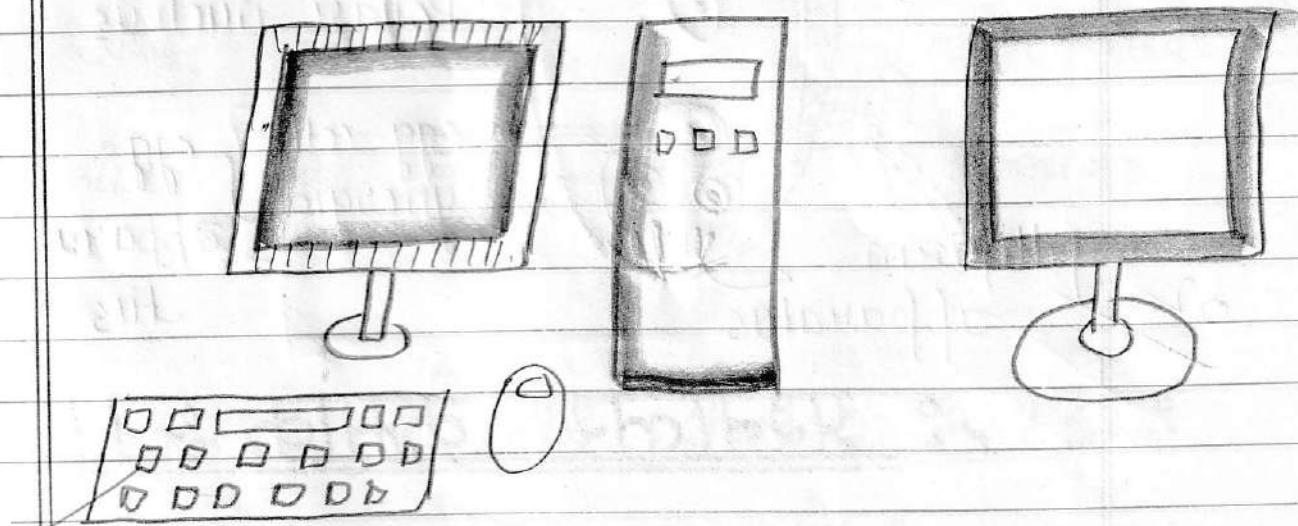
स्टैनेन ।

∴ प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ४ :-

प्र०

इलैक्ट्रॉनिक अपारिषट :-

वस्तुएँ जो इलैक्ट्रोसीटी के उपयोग से
चलती हैं जैसे ये टीवी०, टैलीविजन०,
कम्प्यूटर०, पंखा इत्यादि० ये सभी
उपयोग में आने के पश्चात खरब
हो जाते हैं। ये इलैक्ट्रॉनिक अपारिषट
कहलाते हैं। उदा० - पुराने टीवी०,
बैकर कम्प्यूटर इत्यादि०।



∴ प्रश्नोत्तर क्रमांक :- ५ :-

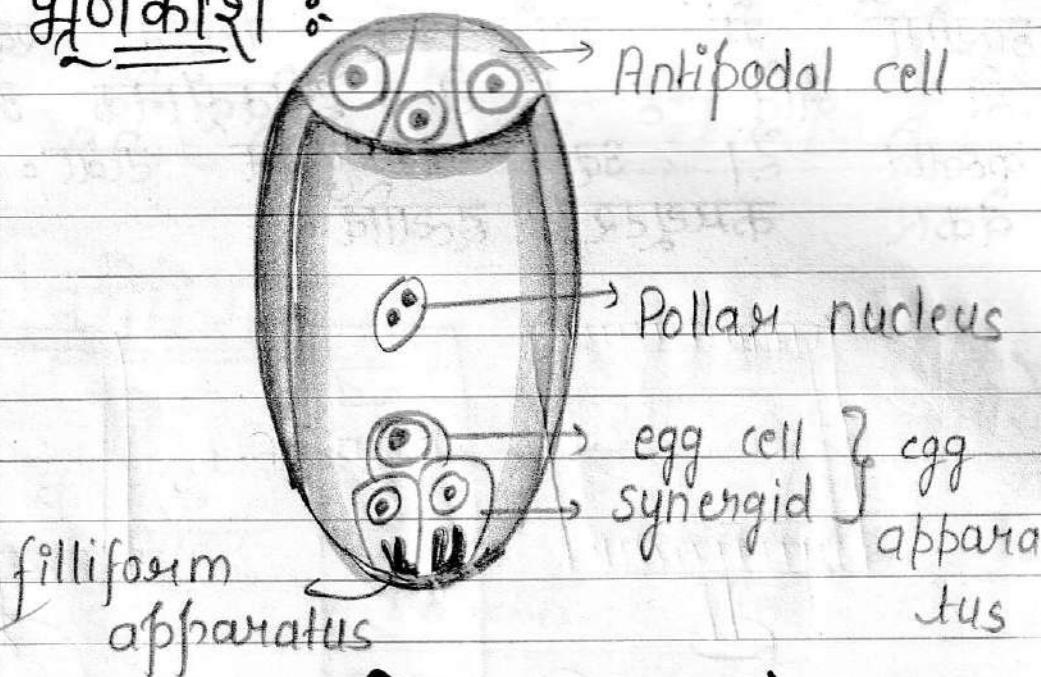
अपरा हारा उत्पादित हो हामीन :-

(i) HCG (ह्यूमन कॉरियोनिक ग्रोनेहोट्रोफिन)

(ii) HPL (ह्यूमन एलेसेन्टल लेक्टोजन)

∴ प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 10 :-

मूणकोश :-



∴ प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 11 :-

∴ बिन्दु उत्परिवर्तन :- DNA के एकल स्थार में

परिवर्तन के कारण उत्पचान, उत्परिवर्तन बिन्दु उत्परिवर्तन कहलाते हैं।

उदा. एसिकल सैल शनीमेया (दात)

कोशिका अरक्तता।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- १२ :-

(क) हीमोजाइन का स्राव
शरीर का अंग :- मानव RBC
पोषक का नाम :- मनुष्य

(ख) जीवाणुज का निर्माण
शरीर का अंग :- मादा एनाप्लीज मट्टर की
लार ग्राहि
पोषक का नाम :- मादा एनाप्लीज

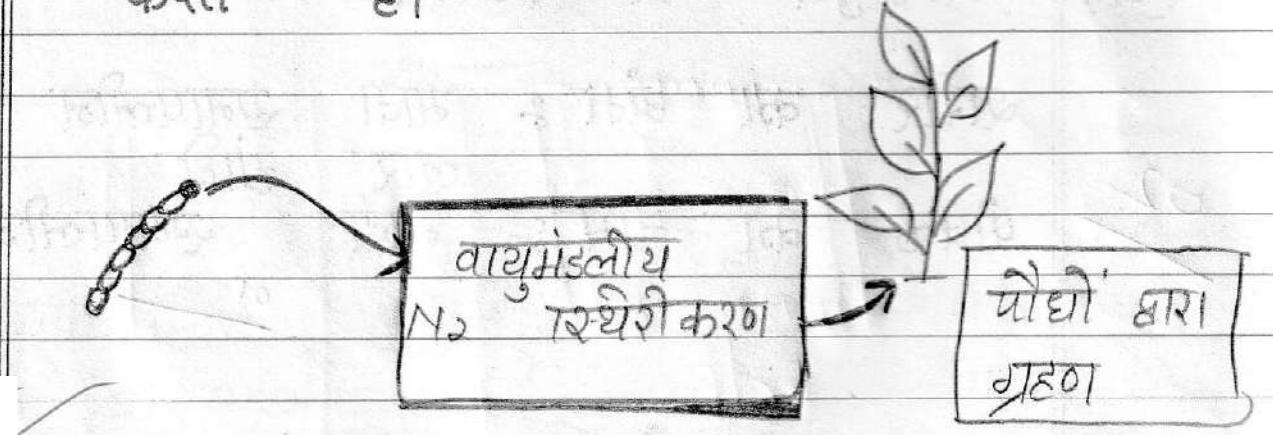
२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- १३ :-

प्रतिरक्षा तंत्र के चार अंग :-

- (i) रक्त
- (ii) थाइमस ग्राहि
- (iii) आस्थि मज्जा
- (iv) हृदय घृत

१० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- १४ :-

जैव उर्वरक सुक्रकार के सूक्ष्मजीव होते हैं जिनमें जीवाणु, कवक, साइनोबैक्टीरिया आदि शामिल हैं। ये वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करते हैं इसे कार्बनिक रूप में बदल देते हैं तथा पौधों के लिए उपलब्ध कराते हैं। लेखुम पादप की जड़ों में उपार्थित राइजोबियम का सहजीवी संबंध है। इसके आतिरिक्त अन्य जीवाणु जैसे रुनाविना, नॉस्टोक इत्यादि सभी N₂ की मात्रा का स्थिरीकरण करते हैं।



१० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- १५ :-

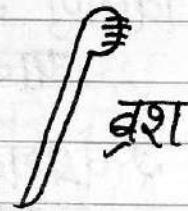
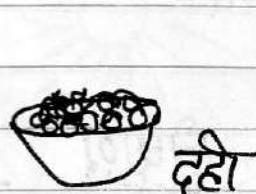
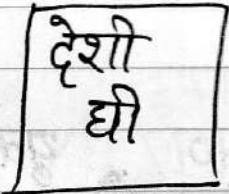
मानव कल्याण में पशुपालन की भूमिका निम्न है :-

(i) विष्मीन प्रकार के पशुओं से दुग्ध उत्पाद जैसे दूध, दही आदि प्राप्त होते हैं।

(ii) विष्मीन प्रकार के पशुओं का उपयोग घोड़ा दीने में किया जाता है। उदाहरण - घोड़ा, श्वर आदि।

(iii) विष्मीन प्रकार के पशुओं का उपयोग खेती के काम में किया जाता है। उदाहरण - बैल आदि।

(iv) पशुओं के अपाशीष्ट जैसे - गोबर व मलमूत्र से कार्बनिक श्वाद बनती है।



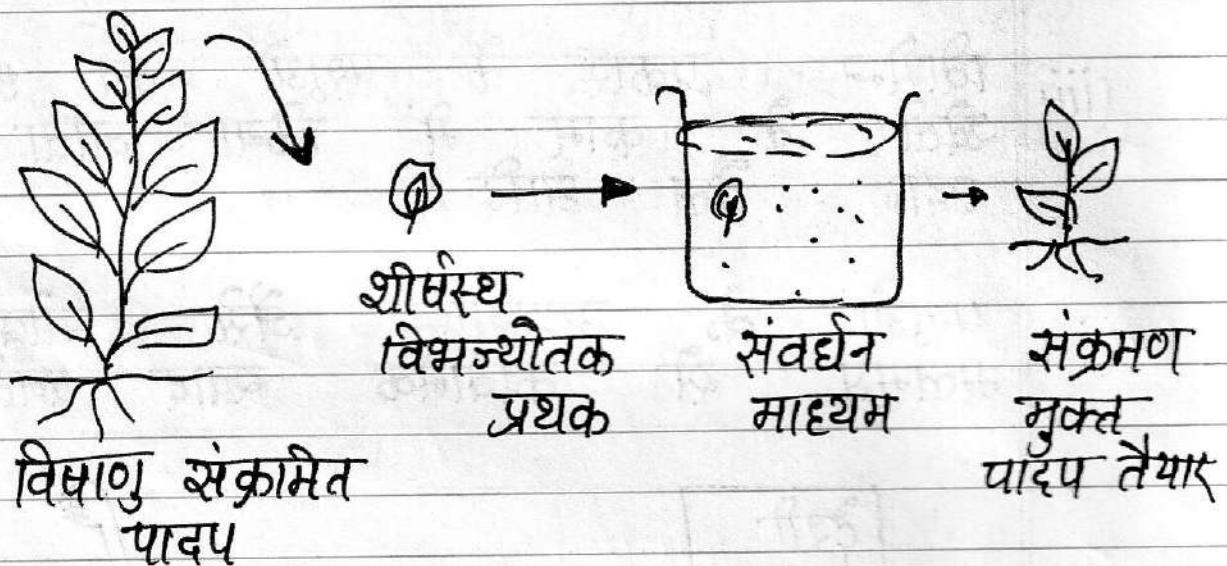
१०: प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 16 :-

१०: ऊतक संवर्धन :- ऊतक संवर्धन वटे तकनीक हैं। जैसमें बहुत ही कम समय में हजारी की संतुलित जाता है इसे सूखमप्रवर्धन कहते हैं।

तमातर आदि का बड़े पैमाने पर
उत्पादन इसी विधि हारा किया
जाता है।

२०

विधानु रहित पादप तैयार करना :-



सर्वप्रथम विधानु संक्रमित युक्त पादप का शीघ्रस्थ विभज्यीतक काट कर प्रथक कर लिया जाता है तथा उसी संवर्धन माध्यम में हुँहि कराकर पादपक तैयार कर लिये जाते हैं जो ससे नया पौधा तैयार हो जाता है।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- १७ :-

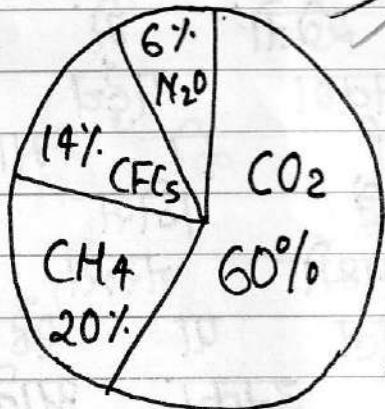
Global Warming :-

विश्वेन मानव जूनिट व प्राकृतिक कारणों द्वारा वायुमंडल के और्जित तापमान में बढ़िए वैश्विक ऊषणता कहलाती है।

वैश्विक ऊषणता के मुख्य कारण निम्न हैं :-

1. यीन हाउस गैसे (CH_4 , CO_2 , CFCs, N_2O) की मात्रा में लगातार बढ़ती है।

2. पर्यावरण प्रदूषण का लगातार बढ़ता स्तर।



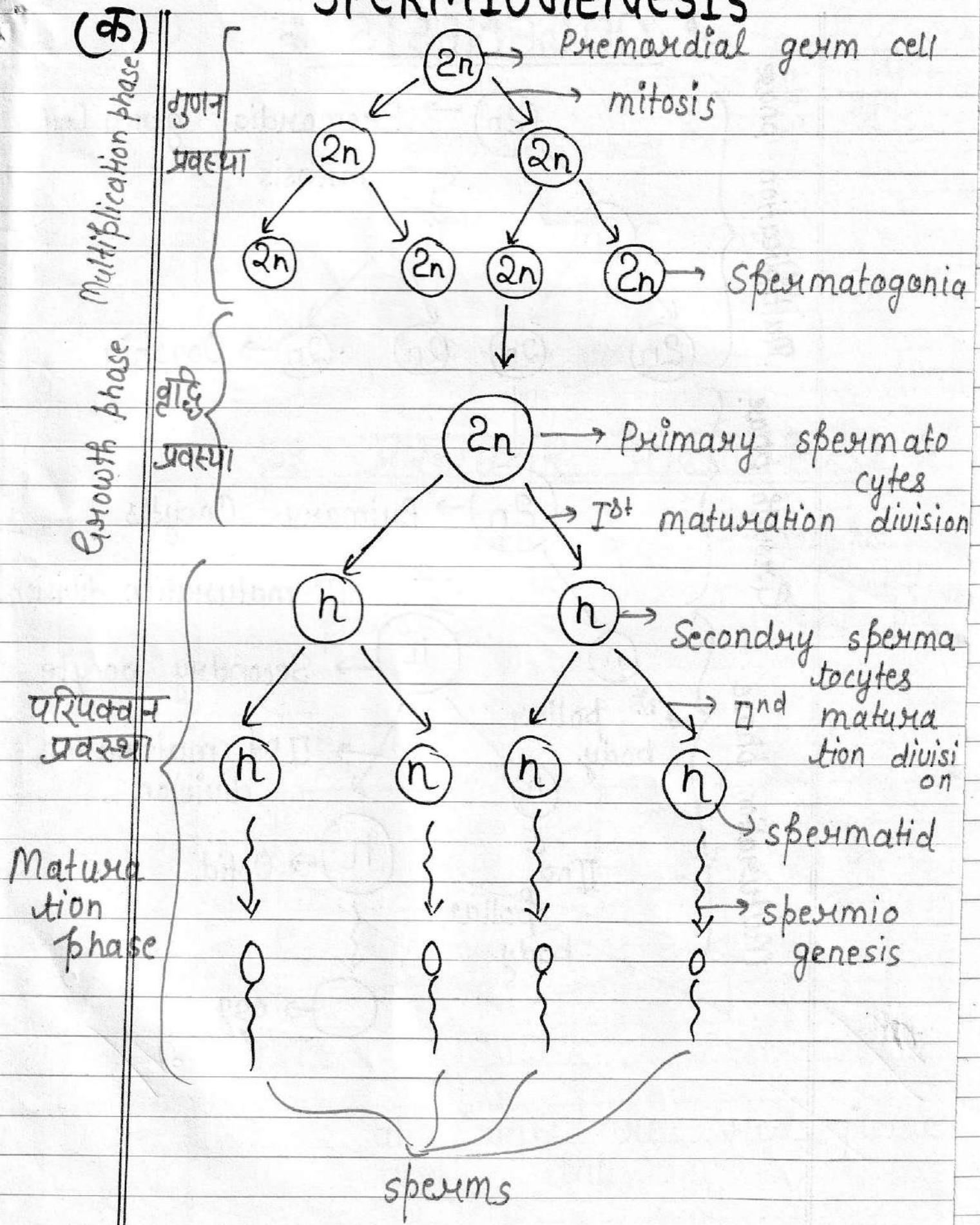
प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 18 :-

१० जलाक्रांति :- स्थिति जब मृदा
मृदा रहता है जेसके कारण
मृदा में वातन अर्धात् वायु लगभग
समाप्त हो जाती है तथा
मृदा के समस्त लवण ऊपर आ
जाते हैं जेसे कारण पौधे को
पथात् मात्रा में लवण तथा
वायु नहीं मिल पाते तथा पौधे
की मृत्यु हो जाती है।

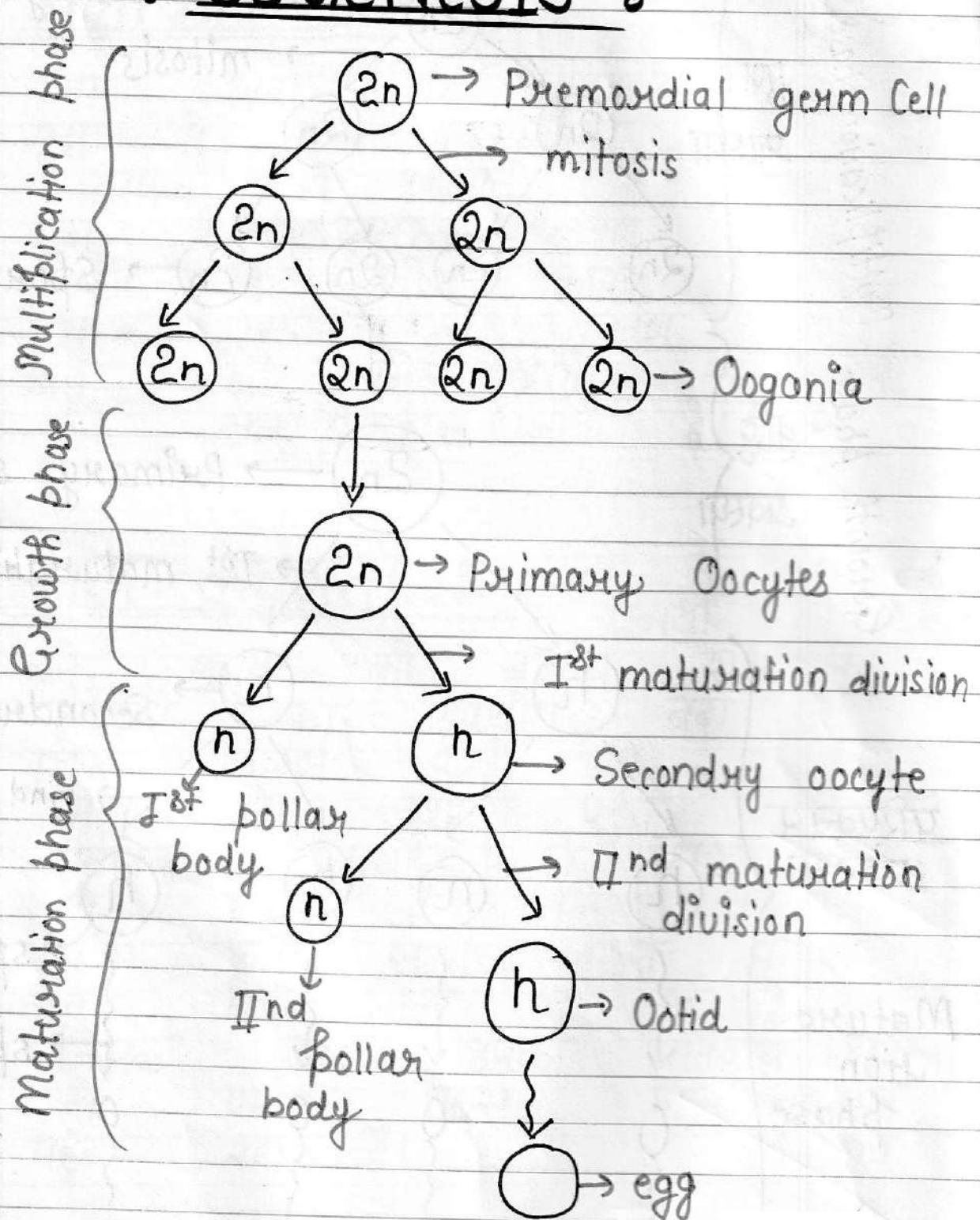
१० मृदा लवणता :- खेतों में कार्बनिक
बने खाद की वजाय रासायनिक
उर्वशकों का उपयोग बढ़ा है
जेसे कारण खेतों में अत्याधिक
मात्रा में लवण पहुँच गये और
कार्बनिक पदार्थों की मात्रा कम
हो गयी है जेसे कारण
पौधे को सभी जरूरी पोषक
तत्व नहीं मिल पा रहे हैं।
जेसके कारण इनका अतिशय मात्रा
में प्रयोग फसल को नुकसान
पहुँचा रहा है।

१० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 19 :-

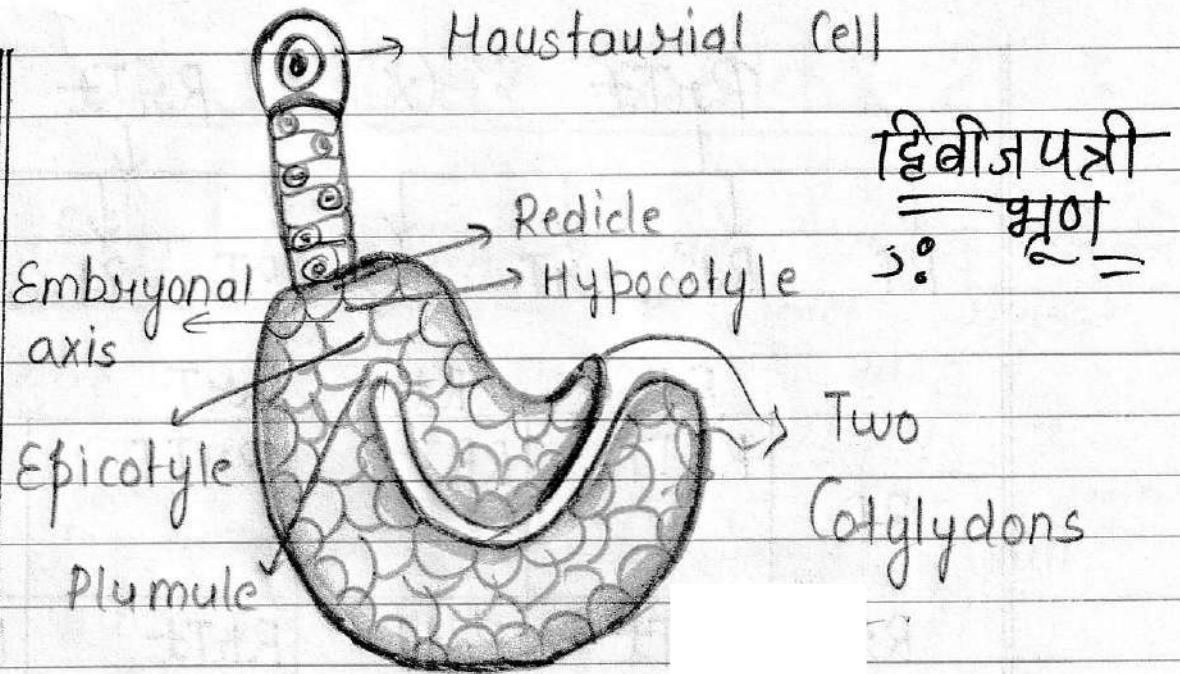
SPERMIOGENESIS



Oogenesis



(ख)

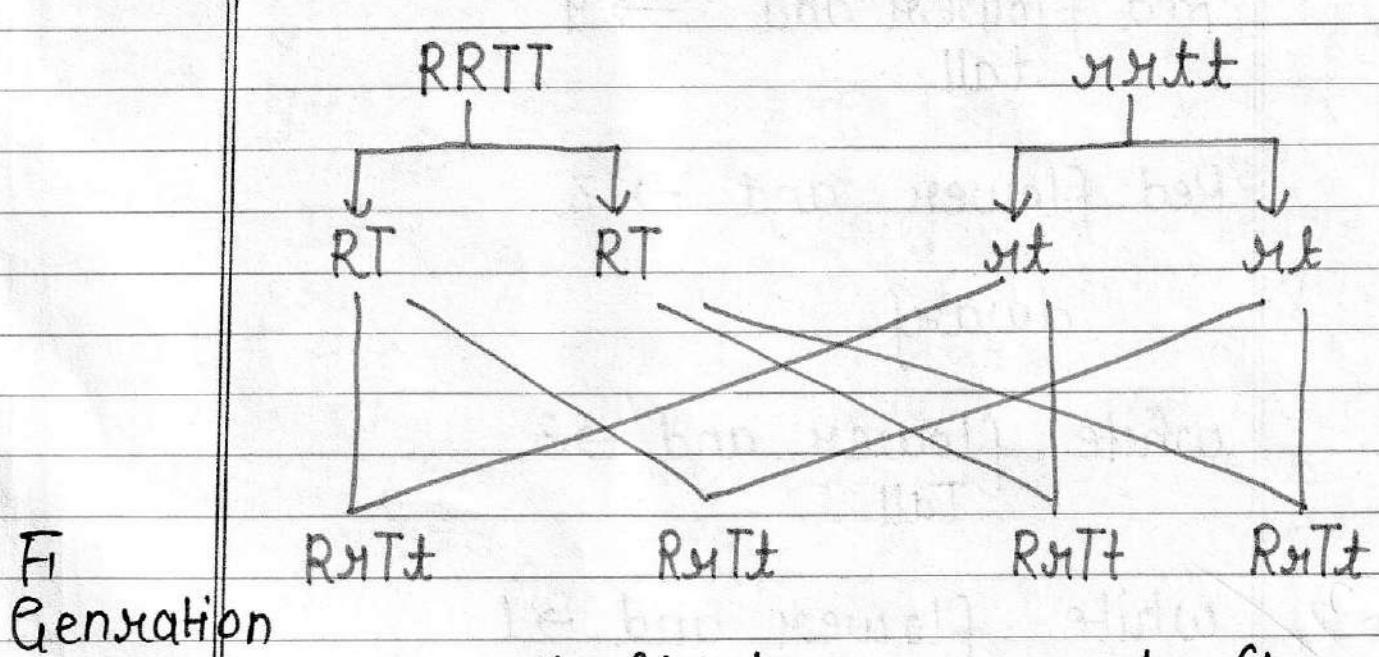


॥ प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 20 ॥

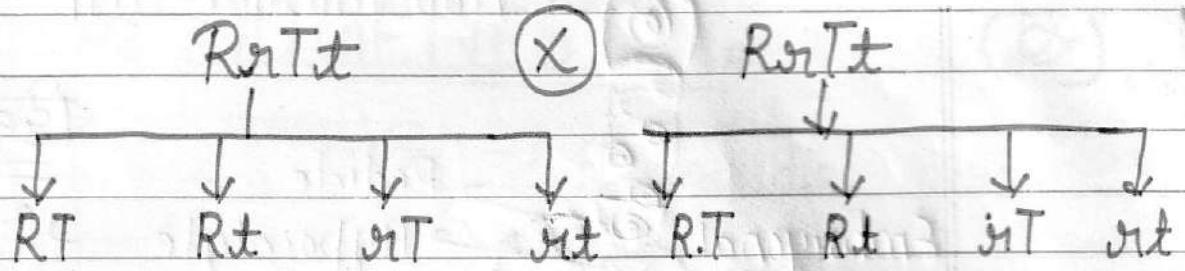
Parent Homozygous
red and tall flower



Homozygous
white and dwarf plant



all plants are red flower
and tall



	RT	Rt	rt	rt
RT	RRTT	RRTt	RRTt	Rrtt
Rt	RRTt	RRtt	RRTt	Rrtt
rt	RRTt	RRTt	rrTT	rrTt
rt	Rrtt	Rrtt	rrTt	rrtt

Red flower and tall → 9

Red flower and → 3

dwarf

white flower and → 3
Tall

white flower and → 1
dwarf

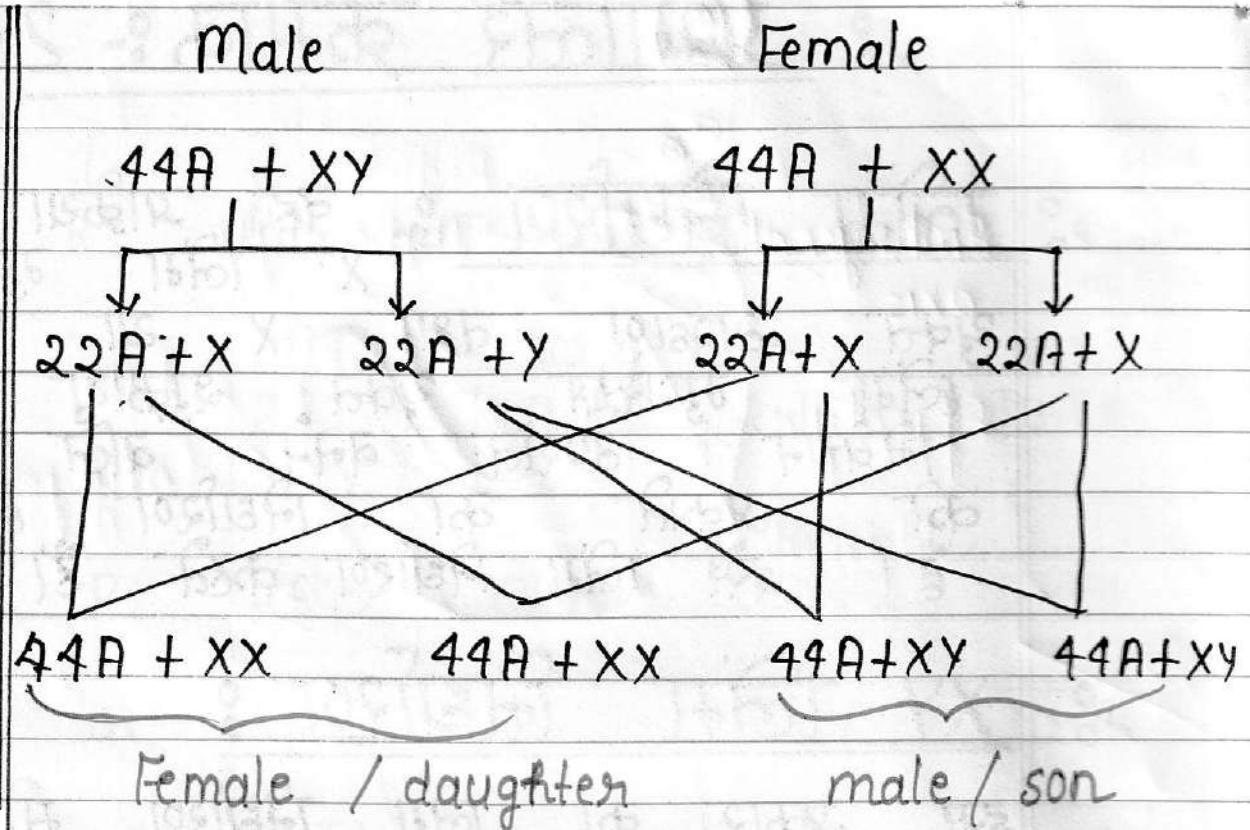
Total - 16

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 21 :-

१० लिंग निर्धारण :- वह प्रक्रिया जिसमें
 युक्त अंडाणु तथा X या Y
 लिंग गुणसूत्र युक्त शुक्राणु के
 निषेचन उपरोक्त बनने वाले युग्मनज
 की प्रकृति का निर्धारण होता
 है। इसे लिंग निर्धारण कहते हैं।

XY लिंग निर्धारण :-

इस प्रकार का लिंग निर्धारण मानव
 तथा ड्रोसोफिला में पाया जाता है।
 मादा में सभी अंडाणु X लिंग
 गुणसूत्र युक्त तथा नर में शुक्राणु
 ५०% X लिंग गुणसूत्र तथा ५०%
 Y लिंग गुणसूत्र वाले होते हैं।
 युग्मज की प्रकृति इस बात पर
 निर्भर करती है कि किस प्रकार
 के शुक्राणु से निषेचन
 हुआ है। यदि X लिंग गुणसूत्र
 युक्त शुक्राणु निषेचन करता है
 तो युग्मनज मादा तथा यदि
 Y लिंग गुणसूत्र शुक्राणु अंड
 निषेचित करता है तो युग्मनज
 नर होता है।



∴ प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 22 :-

∴ आनुवांशिक विकार :-

वे समस्त विकार जो एक पीढ़ी से अल अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होते हैं; आनुवांशिक विकार कहलाते हैं। आनुवांशिक विकार DNA में उपास्थित क्षार युग्मों में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होते हैं।

उदाह :- इसिकल सैल झनीभिया, वर्णाधिता, दीमोफोलिया आदि।

१०

डाउन एसिंड्रोम :

डाउन एसिंड्रोम का कारण २। वे जोड़ी मुग्गासूख की त्रिस्कलता है। इसके कारण मुनुष्ठ में मुग्गासूखों की सं० ४७ हो जाती है। डाउन एसिंड्रोम का पता लेवाइम डाउन ने लगाया था। इस रोग से ग्रासित त्यक्ति में याल्म कीज नहीं होती तथा मानासिक दुर्बलता आ जाती है और त्यक्ति दुर्बल हो जाता है।

२० प्रबन्धितर क्रमांक :- 23 :-

किशोरों में स्लकोहॉल व इनस के शोकथाम व नियंत्रण के लिए निम्न तीन उपाय हैं:-

१. आवश्यक समकक्षी दबाव से बचेः

किशोरों की हमें विभिन्न कार्यों की करने के लिए आवश्यक दबाव नहीं डालना चाहिए वह अपनी राधी के अनुसार जो करना चाहता है उसे उस कार्य में प्रोत्साहन देना टाइट्स तृथा उसका समर्थन करना चाहिए।

२. शिक्षकों से परामर्श लें :-

अगर किसी बात को लेकर कोई समस्या है अथवा किसी विषय के बारे में जानकारी लेनी है जो अपने शिक्षक से परामर्श ले। उसकी सही पुष्टि करें। शिक्षकों द्वारा बच्चों को आकौशाओं का पूछा निवारण हीना चाहिए।

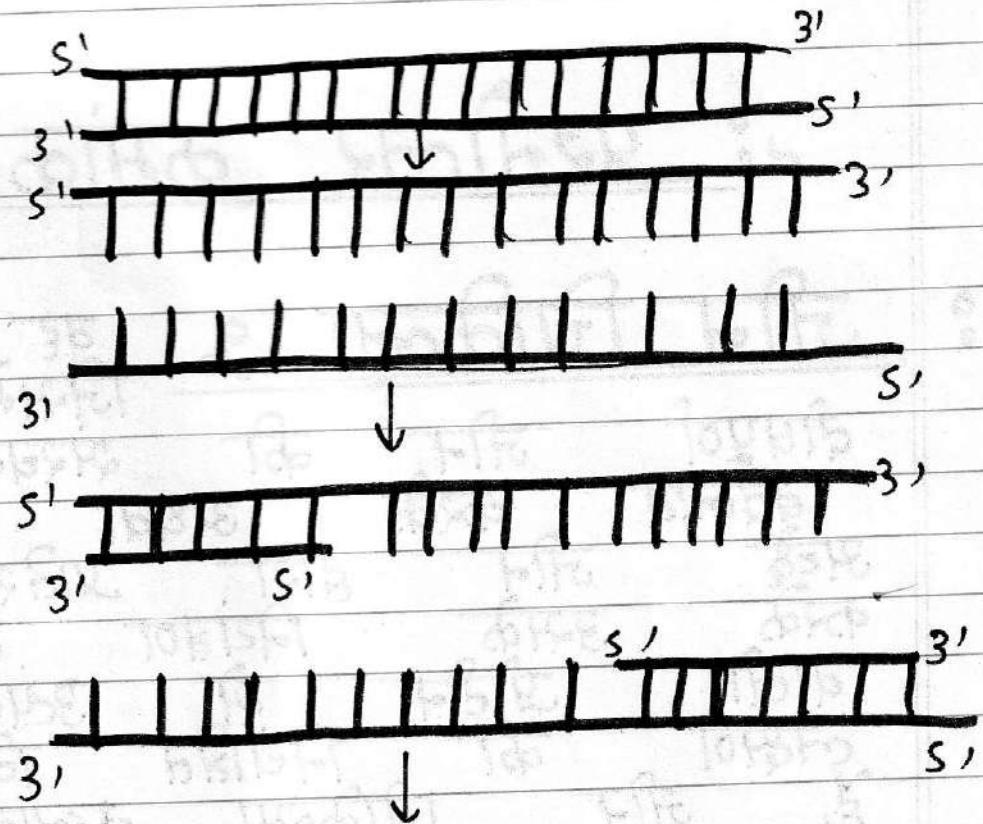
३. सकारात्मकता अपनायें :-

ऐसी कुंजी है जो किसी व्यक्ति को सुधारने व उसका जीवन बुनाने में काम में आती है। हमेशा अपना नजारिया अद्यती सोच से भरा रहना चाहिए तो हम जीवन में कभी निशाचा नहीं होंगे।

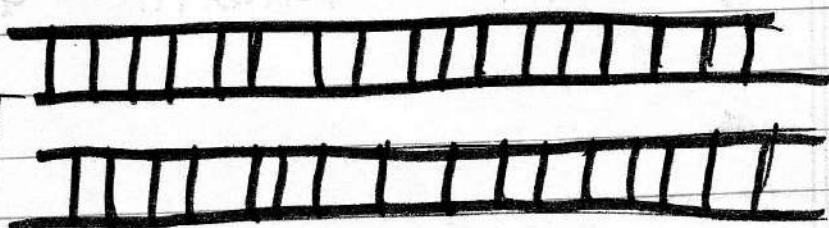
४. प्रश्नोत्तर क्रमांक :- २५

(क) पॉलीमरेज छूँखला अभिक्रिया :-
(Polymerase chain reaction)

इस अभियोग का प्रयोग जब करते हैं तो उनमें किसी DNA खण्ड की अनेकों प्रतिलिपि प्राप्त करनी होती है। इसमें सर्वप्रथम DNA को ताप द्वारा गर्मी करके उसके दीनी खण्डों की अलगा कर देते हैं ताकि उसके पश्चात DNA के पुरक द्वारा 2. उपक्रामकों को संवर्धन मात्रायमें बढ़ाव देते हैं तथा उसमें DNA Polymerase व Tag Polymerase को उपलब्ध कराते हैं जिससे नयी थूबलेयोटाइड संख्याएँ तेयार होती हैं तथा पहले प्रक्रम 100 से हजार बार दोहराया जाता है।



कई गुना
प्रवर्धित



(ख) आण्विक निदान :-

यह विधि पौधों में अपनाई जाती है। इस विधि के अंतर्गत उस RNA स्थंखला की पद्धति कर ली जाती है जो दोषपूर्ण प्रोटीन का निर्माण करती है उसके पश्चात कृतिम रूप से उसकी पुरक स्थंखला बनादी जाती है जो उस स्थंखला से नाकर जुड़ जाती है। उसके पश्चात अब वह स्थंखला उस प्रोटीन का निर्माण नहीं कर पाती। इसे आण्विक निदान कहते हैं।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 25

२० जीन चिकित्सा :- वह चिकित्सा जिसमें दोषपूर्ण जीन की संरचना में वृद्धिकार करके अधवा उसे अदृढ़े जीन हारा प्रतिस्थापित करके उसके नियंत्रण में बनने वाली प्रोटीन श्वेतपूर्ण लंकाण को नियंत्रित कीया जाता है, जीन चिकित्सा कहलाती है।

जीन चोकेल्सा के अन्तर्गत अनेकों अस्पराहनीय प्रयास किये गये हैं। सर्वप्रथम जीन चोकेल्सा का प्रयोग ADA (एडीनोसिन डीस्मीनेस) की कमी को दूर करने के लिये किया गया था।

ADA एक बहुत ही महत्वपूर्ण संजाइम है जो हमारे प्रतिरक्षा तंत्र की मात्रिविधियों को संचालित करने में महत्वपूर्ण शामिका नेश्वाता है। यह हमारे प्रतिरक्षा तंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण संजाइम है।

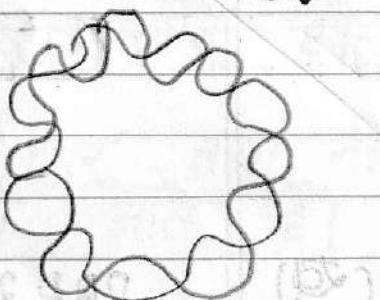
जीन चोकेल्सा के माध्यम से अनेकों शोगों को सही करने में मदद मिली है।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक : २६ :-

(क) Recombinant DNA Technology



इटिट डीएनए



संवाहक डीएनए

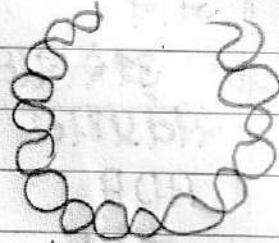


प्रतिबंधन अडोन्युक्लोसेज
द्वारा पृष्ठक

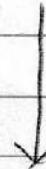
.....

..... वांडित

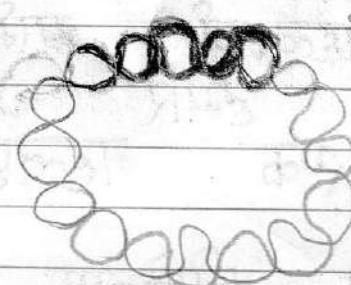
DNA रुपों



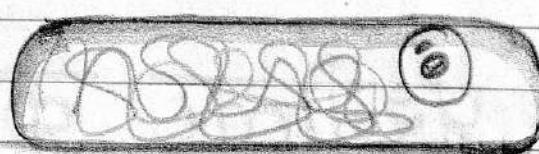
संवादक DNA



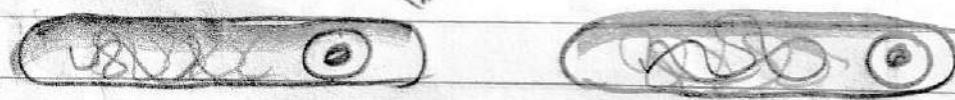
लाइगेज की सहायता
से संवादक में
जाऊना



पुनर्योजित
DNA



संवादक
या वलोनिंग
होस्ट कोशिका



अनेको प्रतिलिपि

(ख)

PBR322 में प्रतिजैविक -

HbRI , ROR

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- २७ :-

(क)

शीत निष्क्रियता | ग्रीष्म निष्क्रियता

1. वैह क्रिया जैसमें प्राणी अत्यधिक शीत से बचने के लिए निष्क्रिय अवस्था में चले जाते हैं, शीत निष्क्रियता कहलाती है।

वह क्रिया जैसमें प्राणी अत्यधिक गर्मी से बचने के लिए निष्क्रिय अवस्था में चले जाते हैं, ग्रीष्म निष्क्रियता कहलाती है।

2.

यह डॉडे क्षेत्रों में पाइ जाती है।

यह अत्यधिक गर्म क्षेत्रों में पाइ जाती है।

(ख)

लिटर :-

अपरद :-

1.

मृदा में गिरी सूखो पालतेयाँ तथा पादपों के अवशेष लिटर कहलाते हैं।

मुख्य अधवा जन्तुओं के मल मूत्र तथा अपाशीष्ट पदार्थ अपरद कहलाते हैं।

2.

ये केवल मृदा के ऊपर पाये जाते हैं। ये अ

ये ऊपर तथा नीचे पाये जाते हैं।

(ग) सहयोजिता

वह पारस्परिक क्रिया जैसमें एक जाति को लाभ तथा दूसरी जाति को न तो लाभ और न होती है।

उदाह- आम के पेड़ व आर्किड के मध्य।

सहीपकारिता

वह पारस्परिक क्रिया जैसमें दोनों जातियों को लाभ होता है।

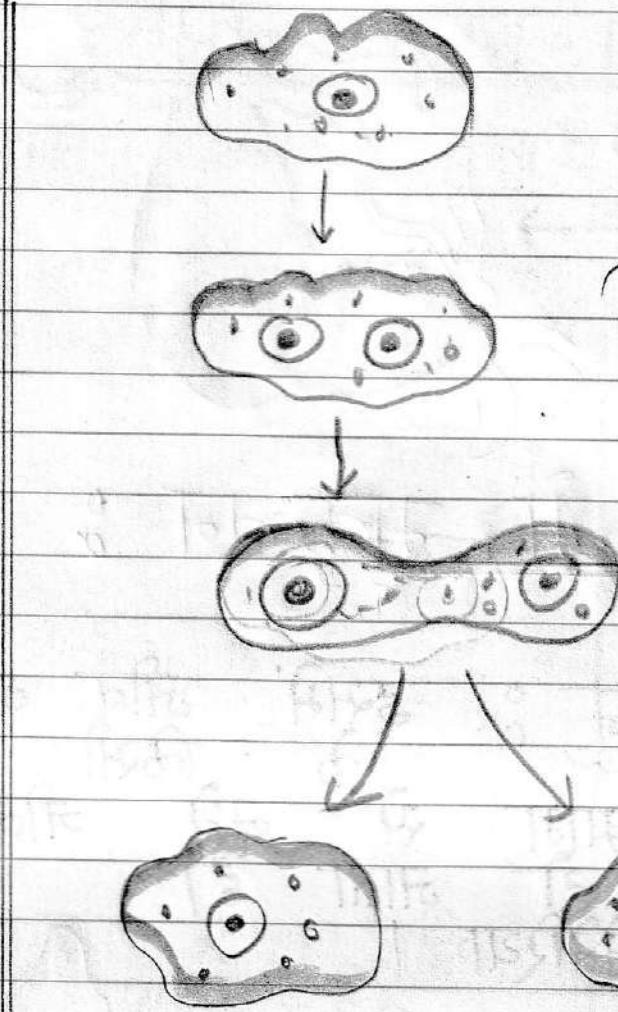
उदाह- लाइकेन में।
(कवक + शैवाल)

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 28 :

अलौंगिक :- वह विधि जैसमें एक संतति का विकास हो जाता है, अलौंगिक जनन कहलाता है।

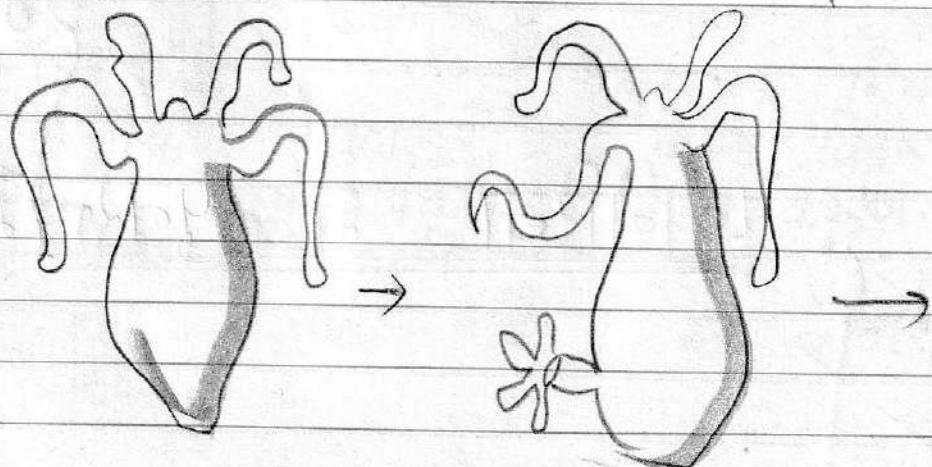
अलौंगिक जनन की विधियाँ :-

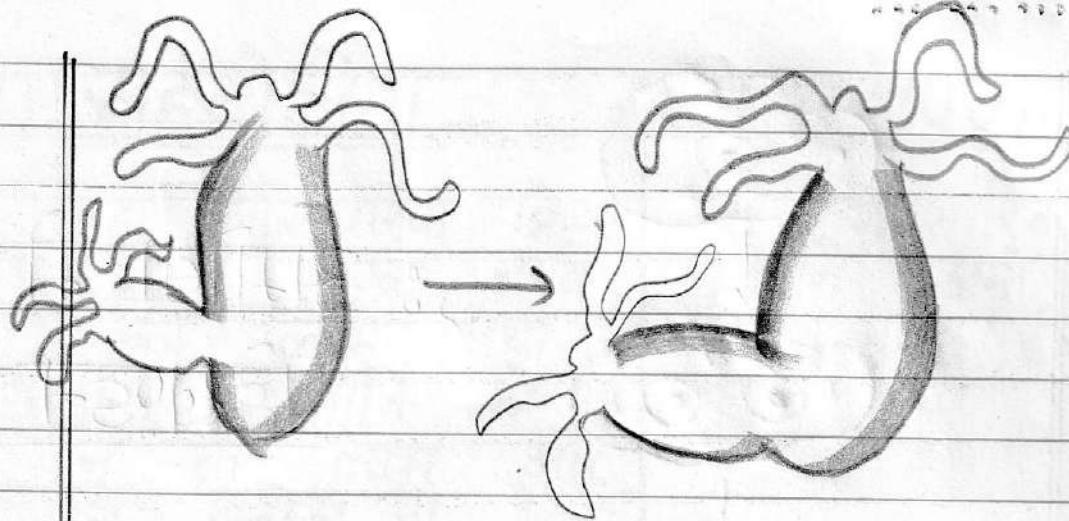
1. **द्विखंडन :-** यह विधि अमीबा में पाई जाती है। जैसमें एक जीव का जीवद्रव्य दो भागों में बंटकर नयी संतति का निर्माण करते हैं।



अमोेबा में
द्विभाजन

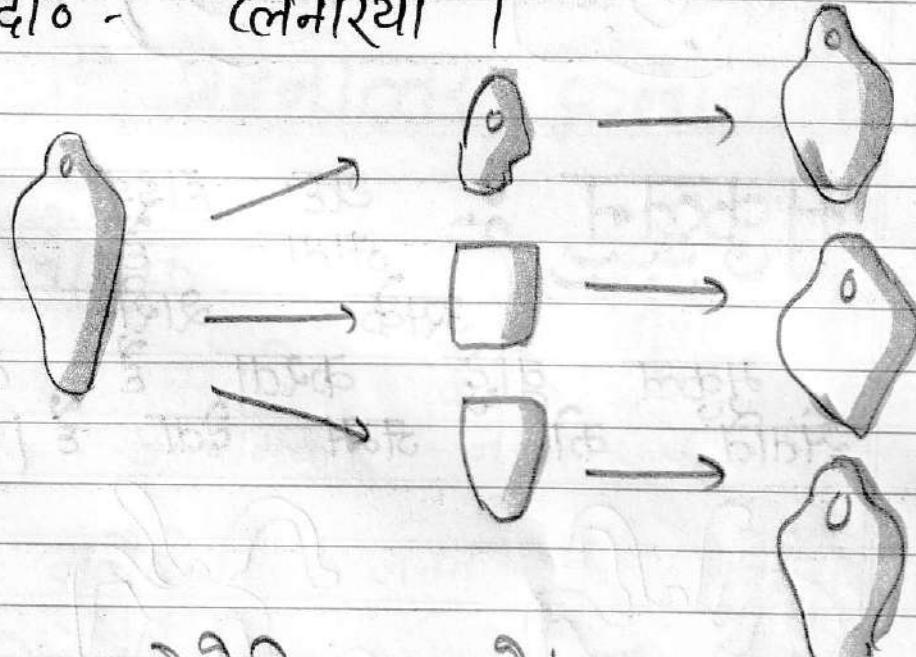
२. मुकुलन :- यह हाइड्रा में पाया जाता है जिसमें उसके शरीर पर कुकुल बढ़ि करता है तथा नयी संतति को जन्म देता है।





∴ हाइड्रा में मुकुलन ∴

3. पुनरुद्धारण : इसमें जीव शरीर के किसी भी भाग से नये जीव का निर्माण हो जाता है।
उदाह - ट्लेनेरिया।



∴ ट्लेनेरिया में पुनरुद्धारण ∴

लैंगिक जनन :- अलैंगिक जनन :-

- | | | |
|----|--|---|
| 1. | यह द्विजनकीय होता है। | यह स्युक जनकीय होता है। |
| 2. | यह उच्च क्षेत्री के जीवों में होता है। | यह निम्न क्षेत्री के जीवों में होता है। |
| 3. | इसमें जीन विनिमय किया होता है। | इसमें जीन विनिमय किया नहीं होता। |
| 4. | यह युग्मकों के निर्माण के उनके मध्य निर्धारण से सम्पन्न होता है। | यह कीशिका विभाजन तथा विभीन्न बीजाणुओं के निर्माण के पश्चात होता है। |
| 5. | यह अत्यंत जटिल प्रक्रिया है। | यह सरल प्रक्रिया है। |

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 29 :-

असुगुणिता :-

समय गुणसूत्रों की अनुपास्थिति गुणसूत्र की ही जाती है। इसे कभी - कभी युग्मक निर्माण के कारण एक आषिकता या कभी

जैसे :- एक मुनास्त्र की आधिकता के कारण डाउन सिंड्रोम।

वृद्धगुणीता :- कभी - कभी विरले से ही पादपों में मुनास्त्र का ऐसा पुरा समुच्चय आधिक हो जाता है जिसे वृद्धगुणीता कहते हैं।

(i) XXY :- इस प्रकार के मुनास्त्र वलाइनोफेल्टर सिंड्रोम में होते हैं। इस प्रकार के व्याक्ति समग्र रूप से पुंप्रधान तथा स्त्रीवत् पुरुष वक्ष वर्धन होता है। इसमें व्याक्तियों में मुनास्त्रों की सं० ४५ होती हो जाती है तथा व्याक्ति बांझ होते हैं।

(ii) XO :- इस प्रकार के मुनास्त्र नारियों में दर्नर सिंड्रोम के कारण होते हैं। ऐसी नारियों में मुनास्त्रों की सं० 45 होती है। ऐसी नारियों में द्वितीयक लौगिक अव्याशय लक्षणों का अभाव होते हैं।

२० प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 30 :-

२० **पिरामिड :-** एक पारिवेत के विभिन्न हिस्सों का आरेखीय निरूपण करने पर जो संरचना प्राप्त होती है, पिरामिड कहलाती है।

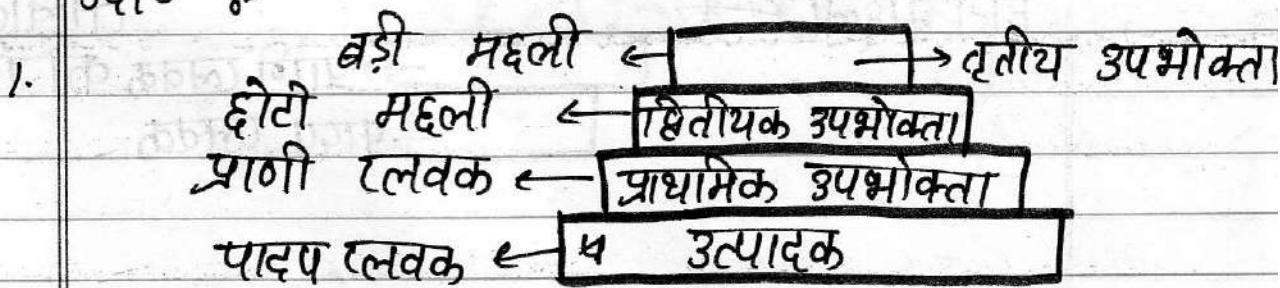
पिरामिड की अवधारणा को अस्त्वत् ने दिया था। जिस कारण इन्हे ऐल्टेनियन पिरामिड भी कहते हैं।

इसमें आधार पर उत्पादक तथा शीर्ष पर कमशः प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक उपभोक्ता होते हैं।

१. जीव संख्या का पिरामिड :-

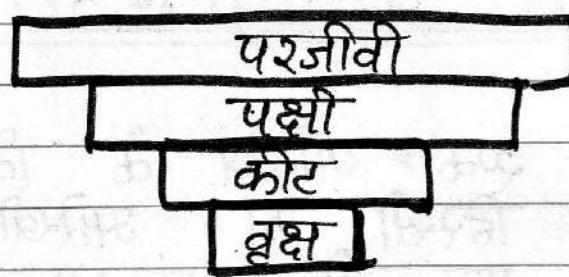
वह पिरामिड जो एक पारिवेत के विभिन्न जीवों के मध्य ऊर्जा संबंध की दर्शाता है, जीव संख्या का पिरामिड कहलाता है।

उदाह :-



तालाब का पिरामिड

2.



वृक्ष का पिरामिड

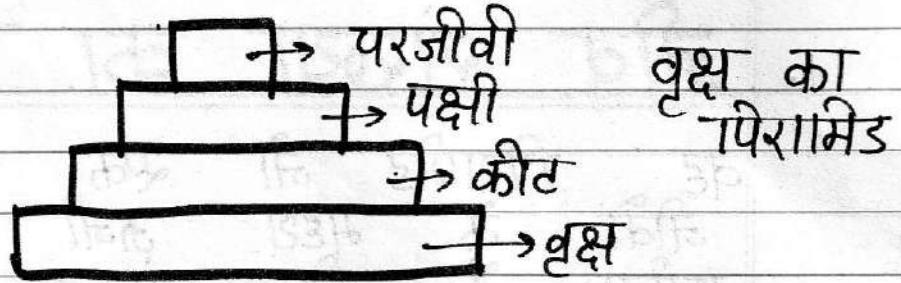
2.

जैव भार का पिरामिड :-

वह पिरामिड जो एक पारितंत्र के विभिन्न जीवों के मध्य जैव भार की वस्तु के संबंध को दर्शाता है, जैव भार का पिरामिड कहलाता है।

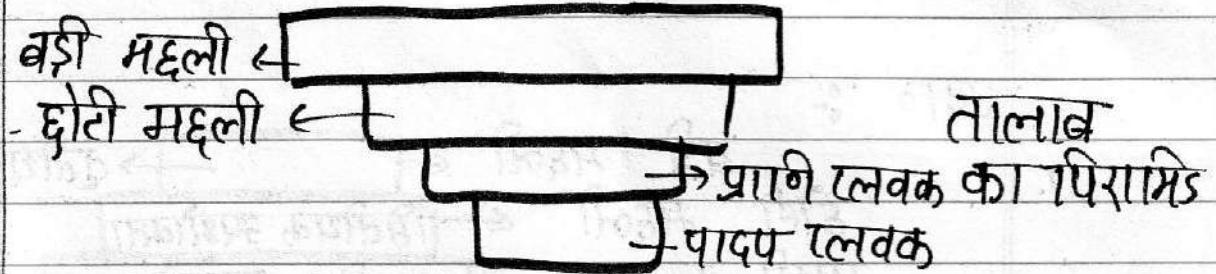
उदाहरण :-

1.



वृक्ष का पिरामिड

2.



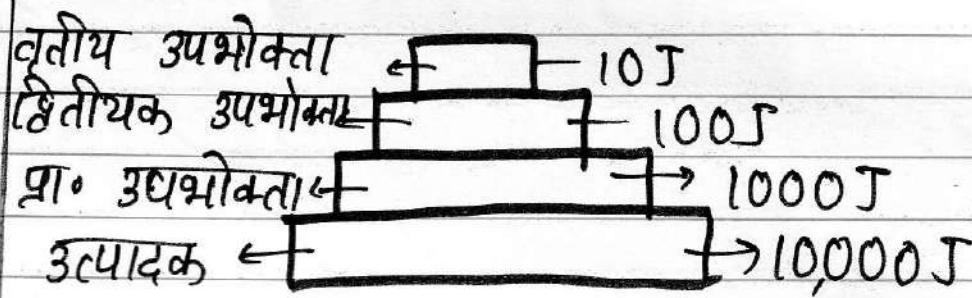
तालाब

प्राणी लवक का पिरामिड

3. अर्जी का पिरामिड है

वह पिरामिड जो सक पारितेष्ट के विभिन्न जीवों के मध्य अर्जी संबंध की व्यापारिकता है, अर्जी का पिरामिड कहलाता है।

यह पिरामिड सदैव सीधा होता है क्योंकि अर्जी का प्रवाह सदैव उत्पादक से उपभोक्ता की ओर होता है।



अर्जी स्थानान्तरण से लिडमान के 10%
अर्जी नियम से होता है।